।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
53

महाकविकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

'विमला'-'चन्द्रकला'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः-

श्रीकृष्णमणित्रिपाठी

भू. पू. प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पुराणेतिहास, संस्कृति, भूगोल विभाग
श्रीसम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

भूमिका

स विश्ववन्द्यो महतां कवीनां गुरुर्ममीपी कविकालिदासः।
यत्काव्य-पीयूष रस-प्रवाह-स्वादामितानन्दमयो हि लोकः॥

कविकलाधर कविवर कालिदास भारतीय साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विभूति हैं तथा प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रतिनिधि कवि हैं। इनकी कृतियों में हमारी संस्कृति के प्राणतत्त्व सुरक्षित है। वस्तुतः भारतीय दार्शनिक मनीषियों ने सत्यं शिवं सुन्दरं के अनुसन्धान में जो बहुमूल्य माणिरत्न प्राप्त किये हैं वे सभी कालिदास की रचनाओं में सन्निविष्ट हैं। भारतीय संस्कृति ने जिन मूल्यों को अपनी साधना एवं अनुभव के आलोक में प्रतिष्ठित किया है उनकी मञ्जुल व्यञ्जना इनके काव्यों में रक्षित है।

संस्कृत साहित्य से परिचित कौन-सा ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने इसका नाम न सुना हो। जिस कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल नाटक ने उनकी कीर्तिकौमुदी को विश्वव्यापी एवं अमर बना दिया है और जिनकी कविताकामिनी की माधुरी पर मुग्ध होकर विदेशी विद्वान् भी आश्चर्यचकित हैं, उस कालिदास का नाम कौन नहीं जानता है।

कालिदास की महत्ता

न केवल भारतवर्ष में ही अपितु सारे संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों में कालिदास का सर्वोच्च एवं प्रमुख स्थान माना गया है; विश्व की किसी भी भाषा का कोई भी कवि अभी तक कालिदास की बराबरी नहीं कर पाया है।

इनके अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक की नाट्यकला पर मुग्ध होकर एक जर्मन आलोचक ने ठीक ही कहा है कि "अंग्रेजी नाटककार शेक्सपीयर की तुलना कालिदास से करना अपनी अज्ञता का परिचय देना है, क्योंकि यदि शेक्सपीयर के सारे नाटक एक तरफ रख दिये जाँय और कालिदास का एक ही नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल दूसरे तरफ रख दिया जाय तब भी शेक्सपीयर के सारे नाटक कालिदास के एक नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल की बराबरी नहीं कर सकते हैं।" जर्मन भाषा में शकुन्तला का अनुवाद देखकर महाकवि गेटे ने आनन्दविभोर होकर इसकी प्रशंसा करते हुए कहा है कि यदि स्वर्ग एवं मर्त्यलोक को एक ही स्थान पर देखना हो तो शकुन्तला को देखो।

इनकी सर्वातिशायिनी अद्भुत विलक्षण प्रतिभा ने सारे विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया है। आपके काव्यों में नाट्यकला की सुन्दरता, महाकाव्य की वर्णनशैली, गीतिकाव्य के सरस हृदयोद्गार को पढ़कर किस सहृदय का हृदय गद्गद नहीं हो उठता है। काव्य, नाटक, गीति जिस दिशा में देखा जाय उसी दिशा में इनकी अद्भुत प्रतिभा ने एक नयी कल्पना को प्रश्रय देकर संस्कृत साहित्य के स्तर को ऊँचा कर दिया है। इनके काव्यों में सरलता, प्रसादगुणसम्पन्नता, उपदेशप्रदता, धार्मिकता एवं भारतीयता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। इसीलिए संस्कृत साहित्य में इनकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य के काव्यसंसार में माघ, भारवि, श्रीहर्ष, सुबन्धु, दण्डी, बाण भट्ट, भास, भवभूति आदि बहुत से विद्वान् हुए हैं, जिनकी कीर्तिकौमुदी दिग्-दिगन्तर में

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

सूत्रधार	नाटका प्रधान पात्र तथा रंगमंच का अध्यक्ष।
दुष्यन्त	नाटक का नायक, हस्तिनापुर का राजा।
सूत	राजा दुष्यन्त का सारथि।
वैखानस	कण्व के आश्रम का ब्रह्मचारी।
विदूषक (माधव्य)	वेश-भूषा, आकार एवं वाणी द्वारा दुष्यन्त का हास्यकार मित्र एवं नर्म सचिव।
भद्रसेन	राजा दुष्यन्त का सेनापति।
रैवतक	दौवारिक, द्वारपाल, राजा का द्वाररक्षक।
ऋषिकुमार	महर्षि कण्व के आश्रम में रहने वाले दो मुनि बालक।
वैतालिक	राजा दुष्यन्त के दरबार के स्तुतिपाठक, दो भाट।
कण्व	आश्रम के कुलपति, शकुन्तला के पालक पिता।
हारित	कुलपति कण्व का एक शिष्य।
शिष्य	,,
शार्ङ्गरव	कुलपति का व्यावहारिक शिष्य।
शारद्वत	कुलपति का गम्भीर शिष्य।
कञ्चुकी	राजा दुष्यन्त का नौकर, रनिवास की देख-भाल करने वाला।
करभक	हस्तिनापुर निवासी माताओं का सन्देशवाहक दूत, बातायन।
पुरुष (धीवर)	एक मछुवा।
श्याल	राजा का शाला, नगररक्षक, नगर का कोतवाल।
सूचक, जानुक	नगर के सिपाही।
सोमरात	राजा का पुरोहित।
मातलि	इन्द्र का सारथि।
मारीच	ब्रह्माजी के पौत्र, मरीचि के पुत्र, प्रजापति कश्यप।
सर्वदमन (भरत)	शकुन्तला से उत्पन्न राजा दुष्यन्त का औरस पुत्र।
गालव	महर्षि कश्यप का शिष्य।

स्त्री-पात्र

नटी	सूत्रधार की पत्नी।
शकुन्तला	नाटक की नायिका, महर्षि कण्व की पोष्यपुत्री, मेनका से विश्वामित्र द्वारा उत्पन्न कन्या।
अनसूया, प्रियम्वदा	शकुन्तला की प्रिय सखियाँ।
गौतमी	कुलपति कण्व की धर्मभगिनी।
प्रतिहारी	राजा दुष्यन्त की परिचायिका।
सानुमती या मिश्रकेशी	मेनका की प्रिय सखी, एक अप्सरा।
परभृतिका मधुकरिका	राजा दुष्यन्त के प्रमदवन की परिपालिका दासियाँ।
चतुरिका	चेटी, राजा दुष्यन्त की दासी।
प्रथमा तापसी	महर्षि कश्यप के आश्रम में रहनेवाली सर्वदमन की रक्षिका दासी।
द्वितीया तापसी	" " " ।
अदिति	महर्षि कश्यप की धर्मपत्नी, देवताओं की माता, दक्ष की कन्या।

प्रसङ्गवश वर्णित अन्य पात्र

मघवा	देवताओं के राजा इन्द्र, हरि, आखण्डल, शतक्रतु, सहस्राक्ष आदि।
दुर्वासा	एक ऋषि, महर्षि अत्रि तथा अनसूया जी के पुत्र।
कौशिक	कुशिक के पुत्र तथा शकुन्तला के जन्मदाता पिता राजर्षि विश्वामित्र।
मेनका	इन्द्रपुरी की एक अप्सरा, शकुन्तला की माँ।
जयन्त	जयन्ती = शची, इन्द्राणी से उत्पन्न इन्द्र का पुत्र।
नारद	देवर्षिनारद, ब्रह्माजी के अङ्गज पुत्र (उत्सङ्गान्नारदो यद्वे)।
हंसपदिका	राजादुष्यन्त की अन्यतमा भार्या।
सुमती	दुष्यन्त की अवसरज्ञा धर्मपत्नी।

॥ श्रीः ॥

महाकविकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(मङ्गलाचरणम्)

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ १ ॥

नत्वा गुरुपदाम्भोजं स्मृत्वा सारस्वतं महः ।
छात्राणां सुखबोधाय विदुषां मोदहेतवे ॥
कालिदासस्य सर्वस्वे ह्यभिज्ञानशकुन्तले ।
श्रीश्रीकृष्णमणिर्व्याख्यां प्रकुरुते च सुधामिधाम् ॥

अथ तत्रभवान् कविकुलकलाधरः कालिदासः अभिनेयार्थं दृश्यकाव्यविशेषं व्याचिकीर्षुः समाप्तिकामो मङ्गलमाचरेदित्यनुमितशिष्टाचारानुसारं निर्विघ्नपरिसमाप्तये स्वेष्टदेवता-स्मरणात्मकं मङ्गलमाचरन्—

'आशीर्नमस्क्रियारूपः श्लोकः काव्यार्थसूचकः ।
नान्दीति कथ्यते' इति ॥

भरतादिभिर्व्याकृताम् अवान्तरवाक्यात्मकाष्टपदभूषितां सर्वानन्दिनीं पूर्वरङ्गाङ्गभूतां नान्दीं नाटकादौ पठति स्थापकनामा सूत्रधारः—या सृष्टिरिति ।

अन्वयः—या स्रष्टुः आद्या सृष्टिः, या विधिहुतं हविः वहति, या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः, या श्रुतिविषयगुणा विश्वं व्याप्य स्थिता, या सर्वबीजप्रकृतिः इति आहुः, यया प्राणिनः प्राणवन्तः, ताभिः प्रत्यक्षाभिः अष्टाभिः तनुभिः प्रपन्नः वः अवतु ॥ १ ॥

या = तनुः स्रष्टुः = ब्रह्मणः आद्या = प्राथमिकी सृष्टिः = सर्गः जलमयीमूर्ति-

---

जो मूर्ति ब्रह्माजी की प्रथम सृष्टि है । (जलमयी मूर्ति) जो विधिपूर्वक हवन किये गये हवि= घृतादि हवनीयद्रव्य को देवताओं तक पहुँचाती है (अग्निमयीमूर्ति) और जो मूर्ति हवन करने वाली है (यजमानरूपा मूर्ति) जो दो मूर्तियां समय=दिन रात का विभाजन करती हैं । (सूर्य और चन्द्रमारूपी मूर्ति) जो मूर्ति शब्द गुणवाली है और विश्व को व्याप्त करके अवस्थित है (आकाश